मन उपजावे मन ही पाले, मन को मन ही करे संघार।
पांच तत्व इंद्री गुन तीनों, मन निरगुन निराकार।। ३ ।।

मन (आदि नारायण) से ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश बने हैं। यह सृष्टि के पैदा करने का, पालने का और नाश करने का काम करते हैं। इस संसार के पांचों तत्व, दसों इन्द्रियां तथा तीनों गुण मन के ही रूप हैं। यह अन्त में निराकार में मिल जाते हैं।

मन ही नीला मन ही पीला, स्याम सेत सब मन।
छोटा बड़ा मन भारी हलका, मन ही जड़ मन ही चेतन।। ४ ।।

नीला (आकाश), पीला (पृथ्वी), श्याम (अज्ञानता), श्वेत (ज्ञान) मन के ही रूप हैं। संसार में कोई छोटा हो या बड़ा, भारी हो या हल्का, जड़ हो या चेतन, सब मन के ही रूप हैं।

मन ही मैला मन ही निरमल, मन खारा तीखा मन मीठा।
एही मन सबन को देखे, मन को किनहूं न दीठा।। ५ ।।

कपट और निर्मलता मन के ही रूप हैं। ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध और प्रेम मन के ही रूप हैं। महामतिजी कहते हैं कि सबके अन्दर व्याप्त होकर नारायण सबको देख रहा है, परन्तु नारायण को किसी ने नहीं देखा।

सब मन में ना कछू मन में, खाली मन मनही में ब्रह्म।
महामत मन को सोई देखे, जिन दृष्टे खुद खसम।। ६ ।।

सारा संसार आदि-नारायण के मन में है। यह सपने का है। वह कुछ नहीं है। अव्याकृत जो अक्षरब्रह्म के मन का स्वरूप है उसमें संसार का कुछ नहीं है। अक्षर ब्रह्म के मन में केवल पारब्रह्म की पहचान है। श्री महामतिजी कहते हैं कि इस अक्षर ब्रह्म के मन के स्वरूप को वही जान सकती है जिन ब्रह्मसृष्टियों को पारब्रह्म की पहचान हो गई है।

।। प्रकरण ।। ४७ ।। चौपाई ।। ५०० ।।

राग केदारो

खिन एक लेहु लटक भंजाए।
जनमतही तेरो अंग झूठो, देखतहीं मिट जाए।। १ ।।

हे जीव! तुझे एक क्षण का समय मिला है। इसमें तू अपना उद्धार कर ले। जन्म से ही तेरा अंग झूठा है। पता नहीं कब मिट जाए।

हे जीव निमख के नाटक में, तूं रह्यो क्यों बिलमाए।
देखतहीं चली जात बाजी, भूलत क्यों प्रभू पाए।। २ ।।

हे जीव! तू इस क्षण भर के नाटक में क्यों मस्त हो रहा है? देखते ही देखते कितने मर गए। तू अपने मालिक को पाकर भी क्यों भूल रहा है?

आपको पृथीपति कहावे, ऐसे केते गए बजाए।
अमरपुर सिरदार कहिए, काल न छोड़त ताए।। ३ ।।

इस संसार में जो चक्रवर्ती राजा कहलाए वह भी राजपाट की ठाठ भोगकर चले गए। बैकुण्ठ के मालिक भगवान विष्णु को भी मौत नहीं छोड़ती।

Nijanand App

जीव रे चतुरमुख को छोड़त नाहीं, जो करता सृष्ट केहेलाए।
चारों तरफों चौदे लोकों, काल पोहोंच्यो आए।। ४ ।।

सृष्टि को बनाने वाले चतुर्मुखी ब्रह्मा को भी काल नहीं छोड़ता। यहां चारों तरफ चौदह लोकों में काल का ही पसारा है जो किसी को छोड़ता नहीं।

पवन पानी आकास जिमी, ज्यों अगिन जोत बुझाए।
अवसर ऐसो जान के, तूं प्राणपति लौ लाए।। ५ ।।

हवा, पानी, आकाश, पृथ्वी तथा अग्नि पांचों तत्व समाप्त हो जाते हैं, इसलिए तेरे हाथ अवसर आया है, उसे पहचान कर अपने प्राणपति प्राणनाथ से चित्तवृत्ति लगा ले।

देखन को ए खेल खिन को, लिए जात लपटाए।
महामत रुदे रमे तासों, उपजत जाकी इछाए।। ६ ।।

कहने को तो यह संसार एक क्षण का है, परन्तु सब इसी में लिपटे चले जा रहे हैं। महामतिजी कहते हैं, हे मेरे जीव! जिस पारब्रह्म की प्रेरणा से यह खेल बना है तू उसको अपने हृदय में बसा ले।

॥ प्रकरण ॥ ४८ ॥ चौपाई ॥ ५०६ ॥

राग देसाख

बाई रे वात अमारी हवे कोण सुणें, अमें गेहेलाने मलया।
एहनो नेहडो सुणीने हूं तो घणुऐं नाठी, पणसूं कीजे जे पांणें पड्या।। १ ।।

हे बहन! यहां अब हमारी बात को कौन सुनेगा? मुझे दीवाने प्रीतम मिले हैं। यह नेह लगाने में बड़े चतुर हैं। ऐसा सुनकर मैं पीछा छुड़ाने के लिए भागी, पर क्या करूं? यह तो मेरे पीछे ही पड़ गए हैं।

हूं मां हुती चतुराई त्यारे पांचमां पुछाती, ते चितडा अमारा चलया।
मान मोहोत लज्या गई रे लोपाई, अमें माणस माहें थी टलया।। २ ।।

यदि मेरे अन्दर भी इनकी तरह चतुराई होती तो मैं लोगों से इसकी जानकारी लेती। इन्होंने तो मेरे चित्त को हरण करके मेरी मान-मर्यादा और लोक-लाज को ही हटा दिया है। इससे मैं मानव संसार से ही अलग हो गई हूं।

माणस होए ते तो अमने मां मलजो, जो तमे गेहेलाइए हलया।
ओल्या वार से वढसे खीजसे तमने, तोहे आवसो ते आंहीं पलया।। ३ ।।

जो अपने आपको सांसारिक मानव समझते हों वह मुझे मत मिलें। मेरे धनी का दीवानापन जिसको भाए, वह मेरे साथ आ जाए। तुम्हारे ऐसे करने के लिए सांसारिक लोग तुम्हें मना करेंगे, लड़ेंगे, झगड़ेंगे, फिर भी तुम हमारे ही पास आओगे।

गेहेले वालें अमने कीधां गेहेलडा, मलीने गेहेलाइए छलया।
जात कुटमथी जूआ थया, हद छोडी वेहदमां भलया।। ४ ।।

दीवाने प्रीतम ने मुझे भी दीवाना बना दिया है। इस तरह से दीवाने प्रीतम ने मुझे अपने वश में कर लिया है। अब मैं जाति, कुटुम्ब और परिवार वालों से अलग हो गई हूं तथा संसार को छोड़कर बेहद के पार प्रीतम से मिल गई हूं।

Nijanand App